

Steve jobs

INTRODUCTION

वॉल्टर आइजेकसन इस बुक के ऑथर को जब पता लगा कि स्टीव जॉब्स कैंसर के लास्ट स्टेज में है तब जाकर वे स्टीव जॉब्स की बायोग्राफी लिखने को तैयार हुए. बेहद होनहार और तेज़ दिमाग वाले स्टीव जॉब्स साल 2004 से आइजेकसन को अपनी जिंदगी पर एक किताब लिखने के लिए मना रहे थे मगर उनकी कोशिश 2009 में जाकर कामयाब हो पाई जब जॉब्स कैंसर से जूझते हुए अपनी दूसरी मेडिकल लीव पर थे |

ईयर 1984 के वक्त से ही टाइम्स मॅगैज़ीन में बतौर मेनेजिंग डायरेक्टर आइजेकसन को कई बार जॉब्स से मिलने का मौका मिला. मगर उस महान इनोवेटर स्टीव ने जब पहली बार आइजेकसन से खुद की बायोग्राफी लिखने के लिए कहा तो आइजेकसन उस दौरान अल्बर्ट आइनस्टीन पर लिख रहे थे और बेंजामिन फ्रैंकलिन पर उनकी लिखी किताब पहले ही फेमस हो चुकी थी. जॉब्स का प्रस्ताव आइजेकसन ने ये कहकर ठुकरा दिया कि “जॉब्स अभी सफलता की सीडिया चढ़ ही रहे हैं और अभी वो वक्त नहीं आया कि उनपर कोई किताब लिखी जा सके”.

लेकिन ये जॉब्स की पत्नी लॉरेन पॉवेल (Laurene Powell) की कोशिशों का ही नतीजा था जो उनसे जॉब्स की बिमारी के बारे में जानकर आइजेकसन ने अपना मन बदल लिया और आखिरकार इस काम के लिए तैयार हो गए. जॉब्स का कैंसर का ओपरेशन होना था. बावजूद इसके वे खामोशी से लड़ रहे थे. एक और बात जिसने आइजेकसन को बहुत प्रभावित किया वो ये थी कि जॉब्स ने उन्हें किताब अपने तरीके से लिखने की छूट दी थी. उन्होंने ऑथर के काम में कभी किसी तरह की दखलअंदाजी नहीं की. फ्रैंकलिन और आइन्स्टाइन की तरह ही स्टीव जॉब्स ने भी साइंस और इंसानियत दोनों की तरक्की के लिए अपनी क्षमताओं का बेहतर उपयोग किया था. इंजीनियरिंग दिमाग के साथ साथ जॉब्स क्रिएटिव भी थे और इन्हीं खूबियों का तालमेल से एक महान इनोवेटर बनता है जो कि वे खुद हैं. जॉब्स अपनी इसी रचनाशीलता से पर्सनल कम्प्यूटर की दुनिया में क्रांतिकारी बदलाव ला पाए. सिर्फ इतना ही नहीं म्यूजिक , डिजिटल पब्लीशिंग और एनिमेटेड मूवीज में भी उनकी बदौलत एक नए दौर की शुरुवात हुई. बेशक उनकी पर्सनल लाइफ या उनकी पर्सनैलिटी एक मुक्कमल तस्वीर नहीं बनाती मगर फिर भी वे अपने काम से हमेशा लोगों की जिंदगी प्रभावित करते रहेंगे और इंस्पिरेशन का सोर्स बने रहेंगे.

बचपन

छोटी उम्र में ही स्टीव जॉब्स जान चुके थे कि उन्हें गोद लिया गया है। और ये बात उनके पिता पॉल जॉब्स और माँ क्लारा हागोपियेन (Clara Hagopian) ने उनसे कभी भी नहीं छुपाई। जन्म के बाद से ही उन दोनों ने स्टीव को पाला था। जब स्टीव जॉब्स 4 साल के थे वो अपने परोसी के घर पर एक लड़की के साथ खेल रहे थे और स्टीव ने उस लड़की को बताया कि उन्हें अडॉप्ट किया गया है। इस बात पर वो लड़की बोली कि इसका मतलब तो है कि तुम्हारे असली माँ बाप तुम्हें पसंद नहीं करते थे। इसीलिए उन्होंने तुम्हें छोड़ा। इस पर स्टीव जॉब्स भाग कर अपने घर गए और ये बात उन्होंने अपने पैरेंट्स को बताई। इसपर उनके पैरेंट्स ने उन्हें कहा कि सुनो स्टीव "हमने तुम्हें इसलिए चुना था क्योंकि तुम सबसे अलग बहुत खास हो," और शायद इसी वजह से स्टीव आत्मनिर्भर और मजबूत इरादों के इंसान बन पाए।

उनके कार मेकेनिक पिता उनके पहले हीरो थे। बचपन में ही स्टीव जॉब्स इलेक्ट्रॉनिक्स में काफी इंटरस्टेड थे। हालांकि वे पढ़ाई में कभी बहुत अच्छे नहीं रहे। क्लास में बैठना उन्हें अक्सर बोरिंग लगता था। अपने हुनर से वे अक्सर कुछ ना कुछ शरारत भरा किया करते। और ये सिलसिला ग्रेड स्कूल से लेकर कोलेज तक चलता रहा।

वोजनिएक Wozniak

(Homestead High) होम्सस्टेड हाई में एक कॉमन फ्रेंड के जरिये स्टीव वोजनिएक और स्टीव जॉब्स की मुलाकात हुई। दोनों स्टीव्स बचपन से ही इलेक्ट्रॉनिक्स और मशीन में गजब के प्रतिभाशाली थे। जहाँ स्टीव जॉब्स अपने पिता की ही तरह एक बिजनेसमैन बनना चाहते थे, वहीं स्टीव वोज (Steve Woz) के पिता जिन्हें मार्केटिंग से चिढ़ थी उन्होंने उन्हें इंजीनियरिंग में कुछ बेहतरीन करने के लिए प्रेरित किया ।

उम्र में जॉब्स से 5 साल बड़े होने के बावजूद वोज बेहद शर्मीले और हद से ज्यादा पढ़ाकू थे। अपने कॉमन दोस्त की गैराज में वे जॉब्स से पहली बार मिले थे। इलेक्ट्रॉनिक्स में गहरी रुचि के साथ ही बॉब डायलन के म्यूजिक ने भी उनकी जोड़ी जमा दी थी।

कालेज ड्राप आउट

जहाँ वोजनियेक ने बर्कली युनिवर्सिटी जाने के फैसला कर लिया था वहीं जॉब्स अभी कन्फ्यूज़न में ही थे कि अपने लिए कौन सा कॉलेज चुने। क्योंकि स्टीव जॉब्स के असली पैरेंट्स ने उन्हें इसी शर्त पर गोद दिया था कि उनकी स्कूली पढ़ाई पूरी कराई जायेगी। इसलिए उनके एडोप्टिव पैरेंट्स को उनकी कॉलेज फीस जुटाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी।

जॉब्स ने फैसला किया कि वे नजदीकी स्टैंडफोर्ड यूनिवर्सिटी नहीं जायेंगे. वे किसी ऐसी जगह जाना चाहते थे जो उससे ज्यादा आर्टिस्टिक और इंटरस्टिंग हो. मगर उनके इस फैसले को उनके पैरेंट्स की मंजूरी नहीं मिली बावजूद इसके जॉब्स ने रीड कॉलेज, पोर्टलैंड ऑरेगोन में दाखिला ले लिया. सिर्फ एक हजार स्टूडेंट्स वाला ये एक कॉलेज बड़ा महंगा था. और फिर अपने हिप्पी कल्चर के लिए मशहूर भी था.

रीड कॉलेज में पढ़ने के दौरान कुछ ही समय बाद जॉब्स को लगा कि जो कोर्स उन्होंने चुना था वो उनके सपनों के आड़े आ रहा था. जो चीज़ें वो सीखना चाह रहे थे, नहीं सीख पा रहे थे. और तब उन्होंने कॉलेज बीच में ही छोड़ दिया. अब वो जो पसंद आता वही सीखने लग जाते जैसे कि कैलीग्राफी. रीड में पढ़ाई के दौरान उन्हें हिप्पी कल्चर पसंद आने लगा था. जेन बुधिस्म पर उन्होंने सैकड़ों किताबें पढ़ डाली और पियोर वेजीटेरियन बन गये. उन्होंने बाल कटवाना छोड़ दिया था और पूरे कैम्पस में नंगे पाँव घूमा करते.

एप्पल

स्टीव वोजनिएक और स्टीव जॉब्स ने कई तरह के छोटे मोटे स्टार्टअप बिजनेस किये. जहाँ वोजनिएक अपने बनाये डिजाइन केवल बेचने तक सिमित थे वहीं जॉब्स कुछ ऐसे प्रोडक्ट बनाकर बेचना चाहते थे जो यूनीक हो और उनसे पैसा कमाए जा सके।

सबसे पहले तो उन्हें एक नाम तय करना था. मेट्रिक्स जैसे टेक्नोलोजिकल और पर्सनल कंप्यूटर इंक जैसे कुछ बोरिंग नाम उनके दिमाग में आये भी मगर फिर एप्पल नाम उन्हें इंटरस्टिंग लगा जो कुछ अलग लग रहा था. इस नाम को चुने जाने की वजह सिर्फ यही नहीं थी कि जॉब्स एक एप्पल फार्म में घूमकर आये थे बल्कि सुनने में एप्पल कंप्यूटर नाम बड़ा मजेदार और शानदार लगता था.

उस वक्त तक वोज (एच पी) के लिए काम कर रहे थे. उन्होंने वहां अपना बनाया सर्कट बोर्ड लगाना चाहा . उनका ये प्रोडक्ट नया था और पहले कभी इस्तेमाल नहीं हुआ था इसलिए उसे नकार दिया गया.इससे निराश होकर वोज ने फिर जो भी प्रोडक्ट बनाये वे 100 फीसदी सिर्फ एप्पल के लिए बनाये. जॉब्स का यही मानना था कि उनकी टीम इसलिए परफेक्ट थी क्योंकि वो दोनों अपोजिट थे एक ओर वोज जहाँ बहुत प्रतिभाशाली तो थे मगर लोगो से मिलने-जुलने में कतराते थे, वहीं जॉब्स की खासियत थी कि वे किसी से भी बातचीत कर सकते थे और अपना काम निकलवाने में माहिर थे.

एक कंप्यूटर स्टोर का मालिक, पॉल टेरेल उनका पहला ग्राहक बना. उसने उन्हें \$500 पर पीस के हिसाब से 50 सर्कट बोर्ड का आर्डर दिया. क्रेमर इलेक्ट्रॉनिक्स के मनेजर को विश्वास में लेकर उससे \$25,000 का उधार लेने के बाद जॉब्स, वोज और उनकी बहन पैटी, अपनी पूर्व प्रेमिका एलिज़बेथ होम्स

और एक दोस्त डेनियल कोट्के के साथ मिलकर काम में जुट गए. और इस तरह लोस एल्टोस में जॉब्स के घर की गैराज से एप्पल की शुरुवात हुई.

लीज़ा

पूरे 5 साल तक क्रिसेन् ब्रेनन के साथ जॉब्स कभी हां कभी ना वाले रिश्ते में बंधे रहे. एप्पल की शुरुवात बहुत सफल रही. जॉब्स अब अपने माँ-बाप का घर छोड़कर कपरटीनो के एक \$600 वाले रेंटड घर में रहने लगे थे. ब्रेनन अब उनकी जिंदगी में वापस आ चुकी थी. दोनों अब साथ रहने लगे थे. जब दोनों ही अपने 23वें साल में थे ब्रेनन,, जॉब्स के बच्चे की माँ बनने वाली थी.

हालांकि जॉब्स का सारा ध्यान सिर्फ अपनी कंपनी पर था. वे अभी घर गृहस्थी में बंधना नहीं चाहते थे. ब्रेनन और उनके बीच अब झगड़े शुरू हो गए थे. इस बच्चे का आना उनके रिश्ते में खटास पैदा कर रहा था. जॉब्स के मन में कभी भी शादी का ख्याल नहीं था और उन्होंने इस बच्चे का पिता होने से भी इंकार कर दिया. इस सबके बावजूद ब्रेनन ने हार नहीं मानी. उनके कुछ दोस्त इस मुश्किल दौर में उनके साथ रहे और 17 मई, 1978 को ऑरेगोन में उन्होंने लिजा निकोल को जन्म दिया.

माँ और बच्चा मेनलो पार्क के एक छोटे से घर में रहने लगे. वेलफेयर में मिलने वाली रकम से उनका गुज़ारा चल रहा था. जब लिजा एक साल की हुई तो जॉब्स को उन्हीं दिनों चलन में आये डीएनए (DNA) टेस्ट से गुज़रना पड़ा जिसका रिज़ल्ट था कि 94.41% चांस है कि स्टीव ही लीसा के बाप हैं। ये साबित हो जाने पर कैलिफोर्निया कोर्ट ने उन्हें लिजा के पालन पोषण के लिए मंथली चाइल्ड सपोर्ट देने का हुक्म दिया. हालांकि कोर्ट के हुक्म से वे अब जब चाहे अपनी बेटी से मिल सकते थे मगर बावजूद इसके वे कभी भी उससे मिलने नहीं गए.

1981

1977 में एप्पल ने शुरुवाती दौर में 2,500 यूनिट्स बेचे और 1981 में उनकी बिक्री बढ़कर 210,000 हो चुकी थी. हालांकि जॉब्स को अच्छी तरह मालूम था कि सफलता का ये दौर हमेशा रहने वाला नहीं है. इसीलिए उन्होंने एक नये प्रोडक्ट के बारे में सोचा जो एप्पल II से ज्यादा बेहतर हो. वे एक ऐसा डिजाईन चाहते थे जो पूरी तरह से उनका अपना बनाया हो.

अपनी बेटी के साथ अपना रिश्ता नकारने के बावजूद उन्होंने अपने नए कंप्यूटर का नाम लीज़ा रखा. दरअसल इसे बनाने वाले इंजीनियर्स को इससे मिलता जुलता एक्रोनिम सोचना पड़ा. लीज़ा का मतलब था लोकल इंटीग्रेटेड सिस्टम आर्किटेक्चर

एप्पल में 100,000 शेयर्स के बदले जेरोक्स पार्क ने अपनी एकदम नयी टेक्नोलोजी जॉब्स और उनके प्रोग्रामर्स को बेच दी. कुछ मुलाकातों के बाद ही एप्पल के इंजीनियर्स जेरोक्स कंप्यूटर के माउस डिजाइन और इंटरफेस की नकल बनाने में कामयाब रहे. लिजा को पहले से बेहतर ग्राफिक्स और स्मूथ स्क्रोलिंग माउस फीचर के साथ बाज़ार में उतारा गया.

आई पी ओ

दिसम्बर 12, 1980 में पहली बार एप्पल को दुनिया के सामने पेश किया गया. मॉर्गन स्टेनले इसके IPO को संभालने वाले बैंको में से एक था. रातो-रात एप्पल के शेयर का दाम \$22 से बढ़कर \$29 हो गया. सिर्फ 25 साल के हिप्पी कॉलेज ड्राप आउट स्टीव जॉब्स अब करोड़ों के मालिक बन चुके थे. इतनी बड़ी सफलता के बावजूद उन्होंने दिखावट से दूर एक सादा जीवन जीना पसंद किया.

जॉब्स ने अपने माता-पिता के नाम \$750,000 कीमत वाले एप्पल के स्टोक कर दिए थे जिससे उन्हें लोन से छुटकारा मिला. वे अब मैग्जीन्स के कवर पर आने लगे थे. उन्होंने पहली कवर स्टोरी अक्टूबर 1981 में (आई एन सी) के लिए की थी. इसके तुरंत बाद ही 1982 में टाइम्स मैगज़ीन में भी उनकी कवर स्टोरी आई. इसमें 26 साला एक नौजवान के करोड़पति बनने के सफ़र की कहानी थी जिसने महज 6 साल पहले ही अपने माता-पिता के गैराज से अपनी कंपनी की शुरुवात की थी.

मैकिन्टॉश

अपने आक्रामक व्यवहार के चलते जॉब्स, लीजा प्रोजेक्ट से जबरन हटा दिए गए थे. इसी दौरान जेफ़ रस्किन नामक एप्पल के एक इंजीनियर एक ऐसा बेहद सस्ता कंप्यूटर बनाने में जुटे थे जिसे कोई भी खरीद सकता था. और अपने इस प्रोजेक्ट का नाम उन्होंने मैकिनटोष रखा जो उनके पसंदीदा सेब की एक किस्म का नाम था.

अब क्योंकि जॉब्स लीज़ा वाला प्रोजेक्ट खो चुके थे तो उनका सारा ध्यान रस्किन के प्रोजेक्ट पर लगा रहा. रस्किन का सपना एक ऐसा सस्ता कंप्यूटर बनाने का था जो स्क्रीन और की-बोर्ड के साथ महज़ \$1,000 की लागत का हो. जॉब्स ने उनसे कहा कि वे सिर्फ मैकिन्टॉश बनाने पर ध्यान दें और कीमत की फ़िक्र ना करें.

मगर रस्किन मैकिनटोष पर काम पूरा नहीं कर पाए. पर संयोग से जॉब्स ने एक दूसरा इंजीनियर ढूँढ कर उसकी मदद से ऐसा डिवाइस बनाया जो कुछ महंगे मगर पहले से बेहतर माइक्रो-प्रोसेसर पर काम कर सके. मैक लीज़ा से भी बेहतर माउस और ग्राफिक इंटरफेस के साथ बाज़ार में उतरा.

जॉब्स ना केवल एक तेज़ दिमाग वाले इंजीनियर थे बल्कि एक एक्स्ट्राऑर्डिनरी डिज़ाइनर भी थे. उनके लिए प्रोडक्ट डिजाइन किसी कला से कम नहीं था. “सिम्पल इज सोफेस्टीकेटेड” यही मैक और एप्पल का मोटो था.

वे चाहते थे कि मैक एक छोटे से पैकेज में आ सकने लायक हो जो अन्दर बाहर से बेहद आधुनिक लगे। इसके अलावा उन्होंने मैक के विंडोज, आइकॉन्स, फॉन्ट्स और बाहरी पैकेजिंग की डिजाइन पर भी खास ध्यान दिया था।

अनगिनत प्रपोजल और रीवीजंस के बाद जॉब्स ने अपनी पूरी डिजाइन टीम के एक पेपर पर सिग्नेचर करवाए। इन सभी 50 सिग्नेचर्स को हर मैकिन्टॉश कंप्यूटर के अन्दर खुदवाया गया। मैक के डिजाइन और टेक्नोलॉजी की खुशी का एक जश्न मनाया गया।

माइक्रोसॉफ्ट

बिल गेट्स और स्टीव जॉब्स ने मिलकर एक एग्रीमेंट किया। ये एग्रीमेंट मैकिन्टॉश को माइक्रोसॉफ्ट सॉफ्टवेयर के साथ तैयार करके बाज़ार में लाने के बारे में था। और शर्त थी कि प्रोग्राम में एप्पल का लोगो ज़रूर रहेगा। लेकिन ये सांझेदारी टिक नहीं पाई। इस मुद्दे पर बातचीत के दौरान जॉब्स और गेट्स की अक्सर बहस हो जाया करती थी।

गेट्स का बैकग्राउंड जॉब्स से बिल्कुल अलग था। उनके पिता वकील थे और माँ एक सिविक लीडर थी। गेट्स अपने खास तबके वाले प्राइवेट स्कूल के वक्त से ही टेक्नोलॉजी के कीड़े रहे थे। और उन्होंने जॉब्स की तरह कभी कोई प्रेंक नहीं खेला था। हार्वर्ड की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर गेट्स ने अपनी खुद की सॉफ्टवेयर कंपनी शुरू कर ली थी।

जॉब्स दूरदर्शी व्यक्ति थे जिनमें अपने काम के प्रति दीवानगी थी और इसी वजह से कभी-कभी उनका लहज़े में एक रूखापन आ जाता था। इसके उलट बिल गेट्स डिसिप्लीन के पक्के थे, प्रैक्टिकल थे जो सोच समझ कर कदम उठाते थे। ये सयॉग था कि दोनों का ही जन्म 1955 में हुआ था। दोनों ही कॉलेज ड्राप आउट थे जो पर्सनल कंप्यूटर की दुनिया में एक क्रान्तिकारी बदलाव लाये थे।

गेट्स माइक्रोसॉफ्ट सॉफ्टवेयर को अलग-अलग तरह के प्लेटफॉर्म में खोलना चाहते थे। मगर जॉब्स चाहते थे कि एप्पल के लिए अलग से कुछ खास सॉफ्टवेयर रहे। उनका ये मतभेद चलता रहा और आखिरकार उनके इस मतभेद का फायदा आई बी एम के पर्सनल कंप्यूटर्स को हुआ।

माइक्रोसॉफ्ट ने पहले अपना ऑपरेटिंग सिस्टम -डीओएस निकाला और बाद में विंडोज 1.0. इस पर जॉब्स ने कहा था "माइक्रोसॉफ्ट की समस्या ये है कि उनके अन्दर क्रिएटिविटी की कमी है, उनके आइडियाज़ ना तो असली होते हैं ना ही उनके प्रोडक्ट में कोई कलचर होता है"

त्यागपत्र

लीजा प्रोजेक्ट जॉब्स के हाथों से छीनकर उन्हें बोर्ड का नॉन-एक्जीक्यूटिव सदस्य बना दिया गया था. बेशक उनके पास एप्पल के 11% शेयर थे फिर भी उनके पास अब ज्यादा अधिकार नहीं रहे. 1985 में उन्होंने प्रेजिडेंट जॉन स्कली से कहा कि वे एक अलग कंपनी खोलना चाहते हैं. जॉब्स ने कहा कि उनकी ये कंपनी एप्पल से अलग होगी मगर उसकी कंपटीटर नहीं होगी.

जॉब्स ने अपनी इस नयी कंपनी का नाम नेक्स्ट रखा. उन्होंने स्कली से कहा कि उन्हें 5 लो लेवल एंप्लॉई चाहिए जिन्हें वे नेक्स्ट में रख सके. जब जॉब्स ने स्कली को 5 कर्मचारियों के नाम बताये तो स्कली नाराज़ हो गए क्योंकि जिन लोगो के नाम जॉब्स ने सुझाये थे, वे बिल्कुल भी लो लेवल के नहीं थे. बोर्ड मेम्बर को लग रहा था कि जॉब्स अब कंपनी के प्रति ईमानदार नहीं रहे और एक चेयरमैन के तौर पर अपने फ़र्ज़ से मुंह मोड़ रहे हैं. सबने एकजुट होकर जॉब्स का विरोध करने का निर्णय लिया.

मीडिया में इस बात की चर्चा जोरशोर से होने लगी कि जॉब्स को चेयरमैन के पद से निकाला जा रहा है. मगर त्यागपत्र का ख्याल उनके मन में तब से ही था जब उन्होंने नेक्स्ट के बारे में सोचा था. आखिर में उन्होंने एक्जीक्यूटिव माइक मर्कुला को अपना त्यागपत्र मेल कर दिया.

जॉब्स के त्यागपत्र की ये कुछ पंक्तियां थी "अब कंपनी एक ऐसा रवैया दिखाती नजर आ रही है जो मेरे और मेरे न्यू वेंचर के लिए सेफ नहीं लग रहा है....जैसा कि आप जानते हैं कि कंपनी की नयी गाइडलाइंस में मेरे लिए करने को कुछ अधिक नहीं बचा, यहाँ तक कि रेगुलर मैनेजमेंट रिपोर्ट पर भी मेरा कोई अधिकार नहीं रह गया है. मैं अभी सिर्फ 30 का हूँ और बहुत कुछ हासिल करने की इच्छा रखता हूँ".

पिक्सर और टॉय स्टोरी

जोर्ज लुकास अपने कंप्यूटर डिवीज़न के लिए किसी खरीददार की तलाश में थे. एक दोस्त ने जॉब्स को सलाह दी कि उन्हें लुकास फिल्म कंप्यूटर डिवीज़न के प्रमुख एड केटमल से मिलना चाहिए. जॉब्स टेक्नोलॉजी के साथ आर्ट को मिलाने में बहुत ज्यादा इंटेरेस्टेड थे। जब वे डिवीज़न गए तो वहां का काम देखकर पूरी तरह हैरान रह गए.

डिवीज़न मुख्य रूप से डिजिटल इमेजेस के लिए सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर बेच रहा था. दूसरी तरफ यहाँ पर एनीमेटर्स थे जो शोर्ट फिल्म्स बनाया करते थे. इस छोटी सी एनिमेशन टीम के मुखिया थे जॉन लासेटर. जॉब्स ने तुरंत ही ये डील पक्की कर ली और 70% शेयर उनके हो गए.

इस डिवीजन का सबसे खास प्रोडक्ट था पिक्सर इमेज कंप्यूटर. और इसलिए नयी कंपनी का नाम भी पिक्सर रखा गया. इसके 3डी ग्राफिक इमेजिंग सॉफ्टवेयर में डिज्नी ने बहुत रुचि दिखाई. उन दिनों डिज्नी का एनिमेशन डिपार्टमेंट बुरी हालत में था. पिक्सर का सॉफ्टवेयर पहली बार डिज्नी के “लिटिल मरमेड” में इस्तेमाल किया गया.

इसी बीच जॉन लासेटर और जॉब्स मिलकर एक ऐसी कहानी सोच रहे थे जो बेजान चीजों की भावनाओं के बारे में हो. लासेटर एक होनहार एनिमेटर थे जो कैलिफोर्निया इंस्टिट्यूट ऑफ आर्ट से पढ़कर निकले थे. जब टॉय स्टोरी को बेशुमार सफलता मिली तो एक असमंजस पैदा हुआ कि ये डिज्नी की फिल्म हो या जॉन लेस्टर की | तब जॉब्स डिज्नी के साथ टॉय स्टोरी और बाकी की एनीमेशन फिल्मों के मालिकाना हक में बराबर की हिस्सेदारी के लिए तैयार हो गये.

मोना और लिजा

सन 1980 से ही जॉब्स गुपचुप तरीके से अपने असली माँ-बाप की तलाश में जुटे हुए थे और इसके लिए उन्होंने जासूसी सेवा की मदद ली. और आखिरकार उन्होंने अपनी असली माँ को ढूँढ निकाला. उनकी माँ का नाम जॉने शीबले था और वो लोस एंजेलस में रहती थी. जॉने स्टीव के असली पिता अब्दुलफताह जन्दाली से अलग रहती थी जो कि एक सीरियन थे. उनकी शादी सफल नहीं रही थी. मगर उन्होंने जॉब्स को बताया कि मोना सिम्पसन नाम की उनकी एक हाफ सिस्टर भी है.

जॉब्स मोना से न्यू यॉर्क में मिले. उन्हें ये जानकर बहुत खुशी हुई कि वो एक नॉवेलिस्ट हैं. दोनों ही आर्ट में गहरी दिलचस्पी रखते थे और यही वजह थी कि उनके बीच एक गहरा रिश्ता बन गया. जॉब्स ने मोना को उनकी बुक रीलीज़ में भी मदद की. दोनों एक दुसरे को बहुत पसंद करते थे और उनके बीच मज़बूत दोस्ती का रिश्ता बन गया.

इसी बीच जॉब्स ने क्रिसेन्न ब्रेनन और लिजा के लिए एक घर खरीदा जहाँ वे दोनों रहने लगी. जब लीज़ा वहां होती तो जॉब्स बीच-बीच में मिलने आते. जॉब्स ने कहा था “मैं पिता नहीं बनना चाहता था इसलिए मैं नहीं था”. जब लीज़ा 8 साल की हुई, जॉब्स का आना जाना और ज्यादा बढ़ गया. उन्होंने देखा कि लीज़ा पढ़ाई के साथ-साथ आर्ट में भी बहुत होनहार थी. लीज़ा उन्हीं की तरह उत्साही थी और कुछ-कुछ उन जैसी ही दिखती भी थी.

एक दिन जॉब्स अपने साथियों को सरप्राइज़ देने के लिए लीज़ा को अपने साथ एप्पल के ऑफिस में लेकर गए. कभी-कभी वे उसे स्कूल से भी लेने जाते थे. और एक बार तो वे उसे अपने साथ टोक्यो की बिजनेस ट्रिप में भी लेकर गए. फिर भी ऐसा कई बार हुआ जब जॉब्स अपनी इन भावनाओं को प्रकट नहीं करते थे, जैसे जैसे वक्त बीतता गया, बाप बेटी का रिश्ता अनेक उतार-चढ़ावों से गुजरा.

शादी

अक्टूबर, 1989 में जॉब्स की मुलाकात लोरीन पॉवेल से हुई. जॉब्स को स्टैंडफोर्ड यूनिवर्सिटी में लेक्चर के लिए इनवाइट किया गया था और पॉवेल तब नयी-नयी बिजनेस स्कूल ग्रेजुएट थी. वे दोनों लेक्चर के दौरान साथ बैठे थे. जॉब्स पहली नज़र में ही पॉवेल के प्रति आकर्षित हो गए थे. उन्होंने आपस में कुछ देर बातचीत की और फिर जॉब्स ने उन्हें डिनर के लिए इनवाइट कर लिया.

लौरीन पॉवेल एक स्मार्ट, आत्मनिर्भर और पढ़ी-लिखी औरत थी. उनका सेन्स ऑफ़ ह्यूमर गज़ब का था और वे शाकाहारी थी. जॉब्स इससे पहले कई औरतों को डेट कर चुके थे मगर पॉवेल से उन्हें सच में प्यार हो गया था. दिसंबर 1990, में वे दोनों छुटिया बिताने के लिए हवाई गए. क्रिसमस पर जॉब्स ने पॉवेल को शादी के लिए प्रपोज किया.

और फिर मार्च 18, 1991 में योसमाइट नेशनल पार्क में वे दोनों शादी के बंधन में बंध गए. उस वक्त जॉब्स 36 साल के थे जबकि पॉवेल 27 की थी. करीब 50 लोग इस शादी में शामिल हुए थे जिनमें जॉब्स के पिता और उनकी बहन मोना भी थी. शादी के बाद ये जोड़ा पालो आल्टो के एक टू स्टोरी में शिफ्ट हो गया था. स्टीव और लौरीन के तीन बच्चे हैं पॉल रीड, एरीन सियेना और ईव.

Restoration (रिस्टोरेशन)

मैक के ग्राफिकल यूज़र इंटरफ़ेस का पता लगाने में माइक्रोसॉफ्ट को कुछ वक्त लगा. साथ ही कंपनी ने अब विंडोज 3.0 भी निकाला. विंडोज़ 95 के रिलीज़ के साथ ही माइक्रोसॉफ्ट ने मार्केट को डॉमिनेट कर दिया. ये अब तक का सबसे बढ़िया ऑपरेटिंग सिस्टम था. इस दौरान एप्पल की सेल लगातार घट रही थी.

जॉब्स को लगा कि स्कल्ली ने एप्पल को प्रॉफिट ओरिएंटेड बनाया है. वो मैक को अपग्रेड करके अफोर्डेबल नहीं बना पाए थे. 1996 में एप्पल के मार्केट शेयर गिरकर 4% रह गए थे जोकि 1980 के आखिरी दशक में 16% थे. जॉब्स एप्पल के सीईओ ज़िल एमेलियो से मिले. जॉब्स ने उनसे कहा कि एक नया प्रोडक्ट बनाकर वे एप्पल को बचाना चाहते हैं.

ये दिसंबर 20, 1996 की बात थी जब एमेलियो ने एक एडवाइज़र के तौर पर एप्पल में जॉब्स की वापसी की घोषणा की. अपने शानदार व्यक्तित्व और तेज़ दिमाग बिजनेसमेन होने की वजह से जॉब्स ने बाद में एप्पल के सीईओ की जगह ले ली. एप्पल में उनकी वापसी का पहला साल बेहद मुश्किलभरा रहा. सभी पुराने बोर्ड मेम्बर जा चुके थे और उनकी जगह नए ढूढ़ने पड़े. एप्पल को 1 बिलियन से ज्यादा का घाटा हुआ था.

सन 1997 में जॉब्स ने एप्पल के “Think Different” केम्पेन का खूब प्रचार किया. उन्होंने इसके लिए बेहतर मार्केटिंग और एडवर्टाईजिंग पर जोर दिया. इस दौरान वे पिक्सर, एप्पल और अपने परिवार के बीच एक संतुलन बनाए रखने की कोशिश कर रहे थे. साल 1998 तक एप्पल ने एक बार फिर से \$309 मिलियन का प्रॉफिट हासिल किया. जॉब्स और उनकी कंपनी, दोनों की गाड़ी एक बार फिर से पटरी पर दौड़ने लगी.

जब जॉब्स अपने 30वें साल में थे, एप्पल ने उन्हें कम्पनी से निकाल बाहर फेंका था. मगर उन्होंने हार नहीं मानी. उन्होंने अपना सारा ध्यान अपने परिवार, पिक्सर और नेक्स्ट को दिया. अपने चालीसवें साल में टॉय स्टोरी बनाकर उन्होंने कामयाबी की ऊँचाई को छुवा. एप्पल में अपनी वापसी के साथ उन्होंने साबित कर दिया कि चालीस के पार की उम्र में भी लोग बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं.

अपने बीसवें साल में स्टीव जॉब्स पर्सनल कंप्यूटर की दुनिया में एक क्रान्ति लेकर आये. उनका ये प्रयास संगीत, मोबाइल फोन्स, टेबलेट, एप्पल, बुक्स और जर्नलिस्म के क्षेत्र में भी जारी रहा.

आइ मैक और एप्पल स्टोर्स

साल 1998 में जॉब्स ने Macintosh को iMac के साथ रीइन्वेंट किया. एक बार फिर उन्होंने प्रोडक्ट बनाया जो मोनिटर और कीबोर्ड के साथ एक मुक्कमल कंप्यूटर था. आइमैक को पूरी तरह से एक होम कंप्यूटर के रूप में बनाया गया था. जॉब्स ने प्रोडक्ट की लॉन्चिंग Macintosh के साथ एक नए तरह के थियेटर में की थी. आइमैक को भी उन्होंने इसी तरह लांच किया. \$1,299 की कीमत का आइमैक, एप्पल का हाथो-हाथ बिकने वाला प्रोडक्ट बन गया था.

1999 में शहर की प्रमुख सड़को या फिर किसी मॉल में एक भी टेक स्टोर नहीं था. जॉब्स ने सोचा “आप तब तक कोई नयी इनोवेशन मार्केट में नहीं ला सकते जब तक कि आपकी पहुँच खरीददारों तक ना हो” तब उन्हें एप्पल के रिटेल स्टोर खोलने का विचार सूझा. एक दिन उनके एक साथी ने उनसे पूछा “क्या एप्पल भी गैप की ही तरह एक बड़ा ब्रांड है ?” जॉब्स ने जवाब दिया कि एप्पल उससे भी बड़ा ब्रांड है.

सबसे पहला एप्पल स्टोर मई, 2001 में वर्जीनिया में खोला गया. सफ़ेद रंग के काउंटर और वूडन फ्लोर वाले इस स्टोर में एप्पल के सभी प्रोडक्ट थे. साल 2004 तक एप्पल ने रिटेल इंडस्ट्री में \$1.2 बिलियन के मुनाफे के साथ एक रेकोर्ड बना लिया था. 2006 में एप्पल का पांचवा एवेन्यू स्टोर मेनहेट्टेन में खोला गया.. इसमें जॉब्स के ट्रेडमार्क मिनिमलिस्ट डिज़ाइन फ्रॉम ग्लास, क्यूब से लेकर स्टेयर केस तक थे. साल 2011 आते-आते पूरी दुनिया में एप्पल के 326 स्टोर खुल चुके थे.

आइ ट्यून्स और आइ पॉड

साल 2000 में अमेरिका में 320 मिलियन के करीब ब्लैक सीडी बिकी. लोग सीडी से गाने अपने कंप्यूटर में डालते थे. जॉब्स म्यूज़िक की दुनिया में भी कुछ नया करना चाहते थे. हालांकि उन्होंने मैक को सीडी बर्नर के साथ बनाया था मगर फिर भी वे कोई और आसान तरीका सोच रहे थे जिससे गाने सूनने के लिए म्यूज़िक आसानी से कंप्यूटर में ट्रांसफर किया जा सके.

उस वक्त जो विंडोज का मीडिया प्लेयर था, वो जॉब्स को बहुत कोम्प्लीकेटेड लगा. इसी दौरान एप्पल के दो पुराने इंजिनियरों ने SoundJam नाम से एक म्यूज़िक सॉफ्टवेयर तैयार किया. एप्पल ने उन्हें वापस कंपनी में लिया और SoundJam को रीइन्वेंट करने के बाद आइ-ट्यून्स बनाया. जॉब्स ने आइ-ट्यून्स को जनवरी 2001 में इस स्लोगन के साथ लांच किया "Rip, Mix, Burn"

जॉब्स ने सोचा, म्यूज़िक प्ले करने के लिए एक ऐसा पोर्टेबल डीवाइस हो जिसे आइ-ट्यून्स के साथ पार्टनर किया जा सके. जब वे जापान में थे तब उन्हें एक नए प्रोडक्ट के बारे में पता चल जिससे तोशीबा बना रहा था. सिल्वर कोइन जितना छोटा ये डीवाइस 5 जीबी यानी 1,000 गाने तक स्टोर कर सकता था. ये डीवाइस तोशीबा ने बना तो लिया था मगर उसका सही उपयोग जॉब्स को पता था.

और हमेशा की ही तरह जॉब्स चाहते थे कि जो भी एप्पल प्रोडक्ट बने वो इस्तेमाल में आसान हो. उन्होंने सोचा चूंकि आइ-पॉड पहले से ही छोटा था तो प्लेलिस्ट को कंप्यूटर के साथ बनाया जाए. तब आइ-पॉड को आइ-ट्यून्स की मदद से सिंक किया जा सकता था. इसके बाद गानों के कॉपी राइट और आइ-ट्यून्स स्टोर्स के लिए जॉब्स कुछ बड़ी म्यूज़िक कंपनियों से मिले.

कैंसर

ये अक्टूबर 2003 की बात थी जब स्टीव जॉब्स को पता चला कि उन्हें कैंसर है. उन्हें पहले एक बार किडनी स्टोन हो चुका था इसलिए तस्सली के लिए वे सिर्फ केट स्केन के लिए गए थे. मगर जांच करने पर डॉक्टर को पता लगा कि उनके पेनक्रियाज़ में ट्यूमर था. जॉब्स की बायोप्सी की गयी जिससे ये पता चला कि ट्यूमर निकाल कर कैंसर को शरीर में फैलने से रोका जा सकता है.

मगर जॉब्स सर्जरी नहीं कराना चाहते थे. इसके बदले उन्होंने पूरी तरह से वेजिटेरियन हो कर एक्यूंपंचर इलाज़ का सहारा लिया. हालांकि उनकी पत्नी और दोस्त उन्हें सर्जरी करवाने के लिए मनाते रहे की उन्हें सच में ओपरेशन की ज़रूरत है, ये बात समझने में उन्हें 9 महीने लगे.

जुलाई 2004 में जॉब्स ने अपना दूसरा केट स्केन करवाया. ट्यूमर बढ़ चुका था. मजबूरन उन्हें सर्जरी करवानी पड़ी और इसमें उनके पेनक्रियाज़ का एक हिस्सा निकाल दिया गया. वे सितम्बर से वापस अपने काम पर जाना चाहते थे मगर बदकिस्मती से उनका कैंसर पूरी तरह उनके शरीर में फैल चुका था. जॉब्स की कीमोथेरेपी चलती रही.

जब उन्हें स्टैंडफोर्ड के कर्मेसमेंट एक्सरसाइज़ के लिए इनवाइट किया गया तो जॉब्स ने अपने कैंसर के ठीक हो जाने की घोषणा की. साल 2005 में उनकी पत्नी ने उनके जन्मदिन पर एक सरप्राइज़ पार्टी रखी. उन्होंने अपना 50वा जन्मदिन अपने परिवार, दोस्तों और साथियों के साथ मिलकर मनाया.

आइ-फोन

सारी दुनिया आइ-पोड की दीवानी हो गयी थी. साल 2005 तक ये एप्पल का कुल 45% रीवेन्यू कमा रहा था. और हमेशा की ही तरह जॉब्स कुछ और इनोवेट करने में लगे थे. उन्होंने अपना ये तर्क बोर्ड के सामने रखा कि जो कभी डिजिटल केमरा के साथ हुआ वो आइ-पोड के साथ भी हो सकता है. इस समस्या से निपटने के लिए एप्पल को अपना खुद का फोन बनाना ज़रूरी था जिसमें इन-बिल्ट केमरा के साथ-साथ म्यूज़िक प्लेयर भी हो.

उन्होंने इस बारे में सोचा और मोटोरोला के साथ टाइ-अप करने के लिए नेगोशिएट किया. मगर जॉब्स पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो पाए. उन्हें मार्केट में उपलब्ध एक भी सेल फोन पसंद नहीं आया. इसके अलावा जॉब्स अपने फ़ोन के लिए एक पोटेंशियल मार्केट भी सोच रहे थे.

जॉब्स किसी को जानते थे जो माइक्रोसॉफ्ट के लिए टेबलेट पीसी बना रहा था. जो इंजीनियर इसे बना रहा था वो इसके बारे में क्लासीफाइड जानाकारी दे रहा था. माइक्रोसॉफ्ट का ये टेबलेट स्टाइल्स के साथ आता था. लेकिन जॉब्स ने अपने इंजीनियर्स से पुछा कि क्या वे ऐसा एप्पल प्रोडक्ट बना सकते हैं जिसमें टच-स्क्रीन हो. जब आइ-फोन का डिजाइन तैयार करके उनके सामने पेश किया गया, जॉब्स ने कहा.....” यही फ्यूचर है”.

कैंसर की वापसी

2008 तक जॉब्स का कैंसर बुरी तरह उनके शरीर में फैल चुका था. असहनीय दर्द के अलावा उन्हें इटिंग डिसऑर्डर से भी जूझना पड़ रहा था. जॉब्स को जवानी के दिनों में अक्सर खाली पेट रहने और एक्सट्रीम डाइट की आदत थी. कैंसर की लाइलाज बिमारी में भी वे खाने के प्रति लापरवाह थे. उस साल जॉब्स का वजन लगभग 40 पाउंड घट गया था.

जब वे आइ-फोन 3G को दुनिया के सामने लेकर आये तो मीडिया ने उनके वजन कम होने पर ज्यादा इंटरेस्ट दिखाया. सिर्फ महीने भर में ही एप्पल के स्टोक घटने लगे थे. आखिरकार जॉब्स को जनवरी 2009 में मेडिकल लीव पर जाना पड़ा. उसके दो महीने बाद ही उनका लीवर ट्रांसप्लांट का ओपरेशन हुआ. उनके लीवर में ट्यूमर पाया गया और डॉक्टर इस बात से और चिंतित हो गए थे.

जॉब्स के मेडिकल लीव पर जाने पर एप्पल के मैनेजमेंट में कुछ अरेंजमेंट किये गए. धीरे-धीरे स्टॉक प्राइस कुछ सुधरे. एक कॉन्फ्रेंस काल के दौरान, ओपरेशन मैनेजर टीम कुक ने कहा” हमें इस बात का

यकीन है कि हम इस दुनिया में सिर्फ महान प्रोडक्ट बनाने के लिए हैं और ये हमेशा होता रहेगा। यहाँ कौन क्या काम कर रहा है, इस बात की परवाह किये बगैर हमारा सारा ध्यान सदा इनोवेटिंग पर रहा है। ये वेल्यूज कंपनी के साथ इस कदर जुड़े हुए हैं कि एप्पल हमेशा बेहतरीन करता रहेगा”। जॉब्स हालांकि बीमारी में भी शांत नहीं थे। उनका जुझारूपन अभी कायम था। साल 2010 में वे ठीक होकर फिर से एप्पल आने लगे थे। कैंसर भी उन्हें रोक नहीं पाया और उन्होंने आइ-पेड के बाद आइ-पेड 2 और आइ-क्लाउड डेवलेप किया।

आखिरी बोर्ड मीटिंग

ये साल 2011 था जॉब्स को उनके डॉक्टर्स ने बताया कि ट्यूमर उनकी हड्डियों और बाकी ओरगंस में भी फैल चुका था। इसके साथ ही दर्द, वजन घटना, इटिंग डिसऑर्डर, नींद ना आना और मूड स्विंग्स जैसी अन्य परेशानियों से उनकी हालत बदतर होती जा रही थी। ऐसे कई प्रोजेक्ट थे जिन्हें जॉब्स पूरा करना चाहते थे मगर अपनी बिमारी की वजह से उन्हें अपने परिवार की देख-रेख में घर पर बैठना पड़ रहा था।

अगस्त में जॉब्स ने लेखक Issacson को मैसेज करके उनसे मिलने की गुज़ारिश की। वे Issacson को अपनी बायोग्राफी के लिए कुछ फोटोज़ दिखाना चाहते थे। उन्होंने हर तस्वीर के पीछे की कहानी उन्हें बताई और बिल गेट्स से लेकर प्रेजिडेंट ओबामा तक उन सब लोगो के बारे में बताया जिनसे वे मिले थे। जॉब्स का शरीर भले ही बहुत कमज़ोर हो गया था मगर उनका दिमाग अभी भी तेज़ चलता था।

जब आईजेकसन जाने लगे तो जॉब्स ने अपनी बायोग्राफी को लेकर चिंता जताई। लेकिन फिर उन्होंने लेखक से कहा “ मैं चाहता हूँ कि मेरे बच्चे मेरे बारे में जाने। क्योंकि मैं उनके साथ ज्यादा वक्त नहीं बिता पाया। मैं चाहता हूँ कि जो कुछ भी मैंने किया, वे उसके बारे में जाने। एक वजह और भी है। जब मैं नहीं रहूँगा तो लोग मेरे बारे में लिखना चाहेंगे। हालांकि वे मेरे बारे में कुछ नहीं जानते तो जो कुछ भी लिखा जाएगा सब गलत होगा। इससे बेहतर है कि मैं अपनी बात खुद की कह सकूँ”।

जॉब्स की आखिरी बोर्ड मीटिंग 24 अगस्त को थी। उन्होंने इस मीटिंग में वो लैटर पढ़ा जिसे वे हफ्तों से रीवाइज़ कर रहे थे। इसमें लिखा था” मैं हमेशा से ही कहता आया हूँ कि कभी अगर मैं एप्पल के सीईओ की हैसियत से अपना फ़र्ज़ और इस कम्पनी की उम्मीदों पर खरा उतरने लायक ना रह पाऊँ तो ये बात आप लोगो को सबसे पहले मैं खुद बताऊँगा, और अफ़सोस की बात है कि वो दिन आज आ गया है”।

CONCLUSION

स्टीव जॉब्स अपनी पसंद में इंटेस हो सके थे उनके साथी उनके लिए या तो हीरो थे या फिर एकदम निकम्मे. इसी तरह उनके प्रतिद्वन्दी भी उनकी नजरों में या तो अक्वल थे या एकदम नाकारा. यही नहीं वे हद से ज्यादा ईमानदार थे. उनके अधीन काम करने वालों के अनुसार वे सीधी और सच्ची बात करने में यकीन रखते थे.

जॉब्स हर काम में अपना दखल देते थे. स्वभाव से वे कंट्रोलिंग थे. मैक का ऑपरेटिंग सिस्टम वे खासतौर पर सिर्फ एप्पल के लिए ही चाहते थे. हालांकि उनके फैसले से माइक्रोसॉफ्ट को फायदा पहुंचा था. लेकिन जॉब्स अपने प्रोडक्ट्स को बेहतर से भी बेहतरीन बनाने पर जोर देते थे. प्रोडक्ट के डिजाइन से लेकर कस्टमर के अनुभव तक में उन्हें अपना दखल चाहिए था. उनका लक्ष्य हमेशा सिर्फ और सिर्फ परफेक्शन रहा.

कंज्यूमर क्या चाहता है इससे ज्यादा वे इस बात का खयाल रखते थे कि मार्किट में आने वाले सबसे पहला प्रोडक्ट सिर्फ उनका हो. उनकी मौजूदगी में एप्पल इनोवेशन में हमेशा सबसे आगे रहा. जैसा कि कम्पनी का मोटो रहा है " थिंक डिफरेंट". स्टीव जॉब्स भले ही कभी-कभी सनकी हो जाते थे मगर उन्होंने खुद को डिजिटल एज का सबसे महान इनोवेटर साबित कर दिखाया.

जॉब्स का हमेशा ये मानना था कि अक्सर किसी भी कम्पनी के डूबने के पीछे एक वजह ये होती है कि जब उनका कोई प्रोडक्ट चल पड़ता है तो कम्पनी का सारा ध्यान प्रॉफिट कमाने में लग जाता है. मगर एक कामयाब कंपनी वही होती है जो आखिर तक कायम रहती है क्योंकि उनका मकसद सिर्फ पैसा कमाना नहीं होता बल्कि हर बार बेहतर करना ही उनका लक्ष्य होता है. और एप्पल के लिए वो यही लक्ष्य चाहते थे.

पूरे तीन दशकों तक जॉब्स लगातार अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे. उन्होंने एप्पल और मेकिनटोश के साथ आल इन वन और रेडी टू यूज पर्सनल कंप्यूटर बनाया. उन्होंने पिक्सर के साथ एनीमेशन की दुनिया ही बदल दी. उनके आइ-ट्यून्स और आइ-पोड ने म्यूज़िक इंडस्ट्री को पायरेसी से बचाया. आइ-फोन और आइ-पेड की मदद से बिजनेस और एंटरटेन एक ही पोर्टेबल डीवाइस में सिमट कर रह गए. और आइ-क्लाउड ने तो डेटा सिंक को बेहद आसान बना दिया.

बेशक स्टीव जॉब्स अब इस दुनिया में नहीं रहे लेकिन उनकी लीगेसी हमेशा जिंदा रहेगी. एप्पल और पिक्सर आगे भी यूँ ही टेक्नोलोजी और आर्ट का तालमेल बनाते रहेंगे. जॉब्स की बायोग्राफी से हम जो चीज़ सीख सकते हैं वो ये है कि हमेशा चलते रहो, सुधार करते रहो और तुम्हारी ये कोशिशें खुदबखुद तुम्हें कामयाब बनायेंगी.

और भी अच्छी और नॉलेजेबल बुक पढ़ने के लिए जुड़े रहे [worldwidenovel](#) के साथ

आपका बहुमूल्य समय देने के लिए दिल से धन्यवाद